Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाश

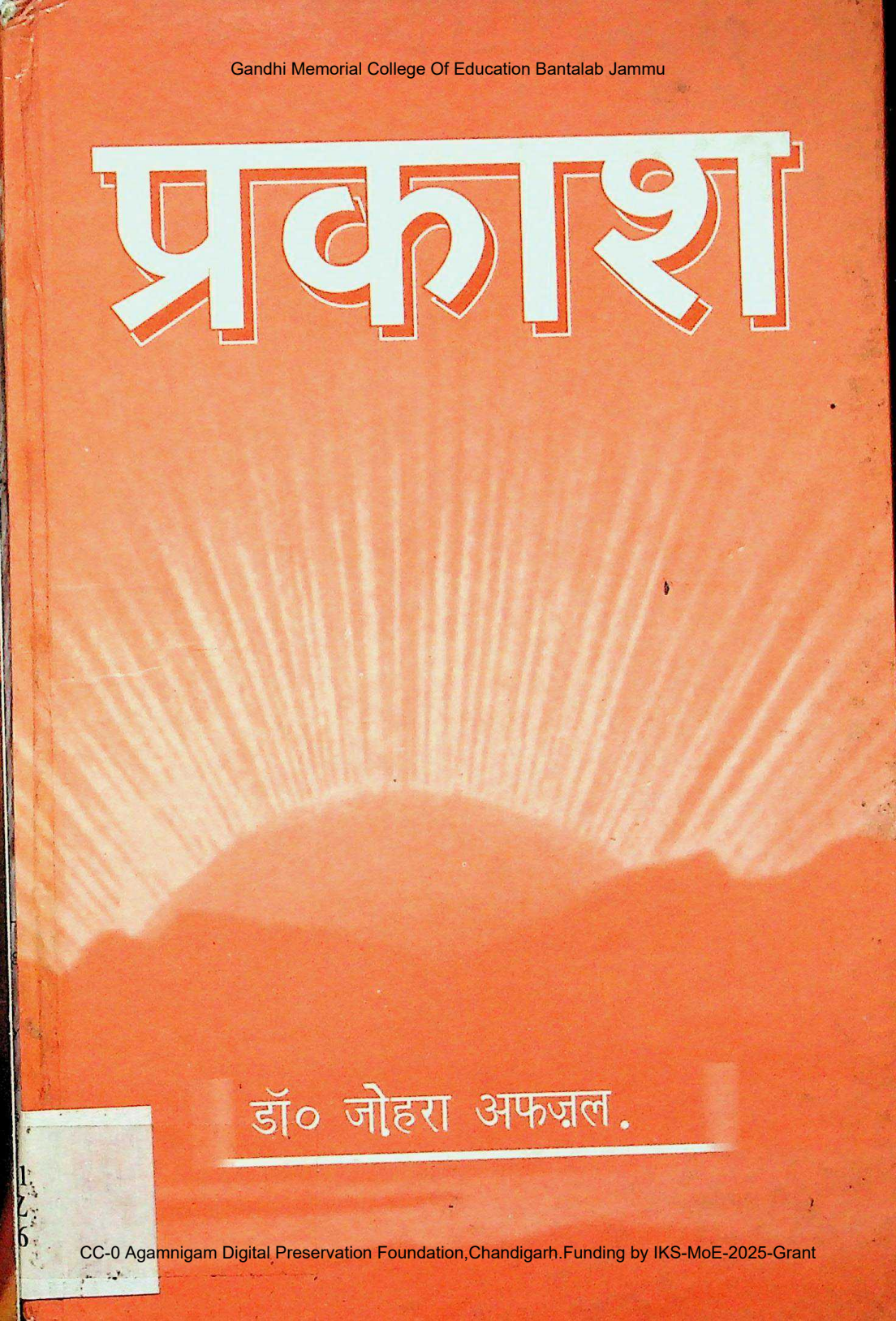

डॉ० जोहरा अफ़ज़ल.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाश'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्रकाश'

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No.....5696
Dated.....17-5-08

8 VI

सम्पादिका
डॉ० ज़ौहरा अफ़ज़ल
रीडर, हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर

G.M.C.E.J
5696

मोहित पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली 110 002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Bajpur, Bantalab
Jammu.
Acc. No.
Dated

प्रथम प्रकाशित 2003

© Authors

मोहित पब्लिकेशन्स

4675/21 अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली 110 002

दूरभाष : 3255141, 3284136

भारत में मुद्रित

श्री पी.के. गोयल द्वारा मोहित पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 110 002 के लिये प्रकाशित एवं तरूण ऑफसेट प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न भूलने वाली भूल

–डॉ॰ देवेन्द्र सिंह

एक साधु थे–बाबा गोपाल दास। उनका एक चेला था–रामदास। बाबा उसे रमई कहा करते थे। दोनों लोग एक पुराने मंदिर पर रहते थे। जब भोग–भण्डारे में कमी होती तो आस-पास के गांवों में निकल जाते। जजमानों से दान-दच्छिना लेकर लौट आते। दो-चार दिन मंदिर के मुँह पर ताले पड़े रहते।

एक दिन बाबा अपने चेले के साथ चल दिए। एक गांव में पहुंचे। सीधे लखन सिंह के बरामदे पर चढ़ गए। चौकी पर बैठकर, झोला-झबला, कमंडल-चिमटा किनारे पर रख दिया। आस-पास खेलते हुए बच्चों ने देखा तो प्रसाद के लोभ में आ पहुँचे। बाबा बोले–"ठहरो बच्चों। पहले हाथ-मुँह तो धो लूँ। जरा पानी लाओ।" किवाड़ की ओट से लखन सिंह की बीबी बोली–"बाबाजी, आज यहीं ठहरिए।"

बाबाजी ने पूछा–"लखन कहाँ है?" उसने जवाब दिया–"कचहरी गए हैं। शाम तक आ जाएंगे।"

बाबा ने फिर पूछा–"बड़ी बिटिया कहाँ है? वह दिखाई नहीं दे रही है।"

लखन की बीबी बोली–"उसकी तो विदाई हो गई।"

"क्यों? इतनी जल्दी। अभी उसकी उमर ही क्या थी? कुछ तो सोचा-समझा होता।" बाबा दुखी हो उठे।

इधर दर्जन भर बच्चे, मौका पाकर गुरु और चेले के झोले पर टूट पड़े। कोई कमंडल का वजन देखने लगा। कोई चिमटे पर सुर साधने लगा। बाबा ने डाँट-डपट कर प्रसाद बाँटना शुरू कर दिया। बच्चे झपट पड़े। धक्का-मुक्की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शुरू हो गई। शोर सुनकर पास-पड़ोस के बच्चे भी आ गये। तीन बच्चे बाबा के ऊपर गिर पड़े, चार चेले के ऊपर गिरे। दोनों संत चौकी पर चित्त हो गए।

बाबा बिगड़ कर खड़े हो गए–"जाओ, भागो यहाँ से। जाओ अपने घर के अन्दर।"

चेला कराहते हुए बोला–"बाप रे? इतने बच्चे? सब हैं चित्रकूट के बन्दर।"

"हे भगवान ! यह गाँव है कि बच्चों की फैक्टरी।" कमर सहलाते हुए बाबा ने चेले को फिर देखकर कहा।

चेले ने चुटिया में गाँठ लगाई। बोला–"बाबा जी, अब यहाँ से चलिए। किसी और जजमान के यहाँ चलें।"

बाबा बोले–"ठीक है, चिमटा उठाओ, चलो।" तभी लखन सिंह की बीबी गोद में बच्चा लिए बाहर आई। वह बाबा से बोली–"साधू बाबा, जरा इस बच्चे को देखिए। पता नहीं इसे क्या हुआ है। रह-रहकर इसकी आँखें उलटी जा रही हैं।"

बाबा जी चौंक पड़े–"अरे बेटी ! क्या जरूरत थी इस दुनिया में ताबड़तोड़ इतने बच्चे लाने की। देख ! तू भी कितनी कमजोर है। तेरा बच्चा भी.....।" कहते-कहते बाबा ने झोले से भभूत निकालकर बच्चे को चटा दी। वह बच्चा लेकर अन्दर चली गई।

इधर बाबा ने आँख मारी। चेला चट से उठा। दोनों चल दिए। अब बाबा राम बिलास के घर आए। राम बिलास भी आठ साल तक के कुल पाँच बच्चों का बाप था। वह अभी खेत से लौटा नहीं था। उसके बच्चों ने इन दोनों संतों को घेर लिया। कुछ पड़ोस से भी आ धमके। राम बिलास की लड़की घर में गई। पानी-मीठा लाई। फिर अन्दर गई। एक बच्चे को लेकर बाहर निकली। उसने बच्चे को बाबा की गोद में रख दिया। पड़ोस के एक लड़के ने अपनी दुधमुही बहन को रामदास की गोद में डाल दिया। दोनों संत बच्चे पाकर मग्न हो गए। उन्हें दुलराने लगे।

अचानक रामदास ने चिल्ल-पों शुरू कर दी–"बाबा जी। मैं अपवित्र हो गया। बच्चे ने मेरे कपड़े भिगो दिए। मेरा झोला और पूजा पाठ का सामान भी। छि: छि:..... !"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब चिल्लाने की बारी बाबा की थी–"अरे रमई ! सत्यानाश हो गया। लगता है बच्चे का पेट खराब था। ओ हो हो हो.....मेरे वस्त्र। बदबू आ रही है। अरे माई ! इन बच्चों को लो।"

बच्चों से मुक्त होकर चेला बोला–"बाबा जी यहाँ से जल्दी चलिए किसी तालाब पर। पहले पवित्र हो लें।"

दोनों गाँव से बाहर आए। अँधेरा छाने लगा था। एक गंदे तालाब ने दोनों को पवित्र किया।

बाबा बोले–"हे राम ! दो-तीन घरों के बीच ही दर्जन भर बच्चे कुलाँच रहे हैं।"

चेला बोला–"बाबा जी, अब हम इस गाँव में नहीं घुसेंगे। चलिए।"

बाबा–"रात हो रही है। कहाँ चलोगे। सोओगे कहाँ?"

चेला–"किसी पेड़ पर चढ़कर सो लेंगे। ऐसे गाँवों से बाग भले।"

अँधेरा छा गया। दोनों संत आगे बढ़े। तभी उन्हें दूर से एक औरत आती दिखाई दी। चेला डरा–"बाबाजी, लगता है यह चुड़ैल है। भागिए।"

तभी दूसरी ओर से आते हुए दो आदमी दिखे। बाबा, बाग में खड़े हो गए। चेला काँपने लगा। बाबा भी डर गए।

तीना परछाइयाँ बाग में आ घुसीं। दोनों आदमियों में एक लखन सिंह था और दूसरा चमन सिंह। दोनों कचहरी से लौट रहे थे। दोनों ने बाबा को पहचान लिया। पाँव छुए। बाबा ने अपनी आप बीती सुना दी। तभी तीसरी परछाईं पास आ गई। वह लखन सिंह से लिपट कर रोने लगी। बाबा जी समझ गए, यह लखन की बड़ी लड़की है। वह बोल पड़े–"छि: लखन सिंह। इतनी कम उम्र की बिटिया को तुम्हें ससुराल नहीं भेजना चाहिए था। देखो तो तुम्हारी फूल जैसी बिटिया सूखे गन्ने जैसी हो गई है।"

बिटिया रोते हुए बोली–"मैं बीमार पड़ गई। घर वाले मेरी दवा नहीं करा रहे हैं। मुझे मारते हैं। कहते हैं–दहेज कम मिला।" वह फफक पड़ी।

लखन भी रो पड़ा–"बाबा जी, अब मेरे घर चलिए।"

सब लोग गाँव में घुसे। लखन सिंह के घर में कुहराम मचा था। उसका गोद का बच्चा दम तोड़ चुका था। सब रो रहे थे।

बाबा और रमई सोच रहे थे–आज बुरे फँसे। इधर घर में बच्चों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तादाद बढ़ाकर, बिटिया को कम उम्र में ससुराल भेजकर, लखन खुद को अपराधी महसूस कर रहा था।

बच्चे की मौत, बेटी और पत्नी की बीमारी ने उसे तोड़कर रख दिया।

बाबा ने उसका सिर सहलाते हुए कहा–"देखो बेटा लखन ! तुम्हारी भूल ऐसी है, जिसे अब तुम सुधार नहीं सकते। हाँ, अपने को सम्हाल जरूर सकते हो। मैं भी यहीं महीने भर रहकर तुम्हारी गाय-भैसों की सेवा करूँगा। तब तक तुम्हें दवा-दारू से छुटकारा मिल ही जाएगा।" चेला आँखें फाड़े बाबा को देखता रह गया।

–रा० इ० का०, लमगड़ा (अल्मोड़ा)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"विद्या दान करें"

–भारतेन्दु अरजरिया 'इन्दु'

माँ सरस्वती का ध्यान धरैं,
सब मिलकर विद्या दान करैं।।

गाँवों में सघन अँधेरा है,
पग पग अभाव ने घेरा है,
जड़ता का स्थिर डेरा है,
अक्षर कोसों तक नहीं यहाँ
समुचित उपचार निदान करैं।
सब मिलकर विद्या दान करैं।।

शुभ स्वच्छ पवन सुखदाई है,
ईर्ष्या ने घुटन बढ़ाई है,
संग जातिवाद की खाई है,
यह दुखद बात है सोचनीय,
इसका कुछ तो संधान करैं।
सब मिलकर विद्या दान करैं।।

प्रज्ञा प्रकाश जब आएगा,
तब अंधकार मिट जाएगा,
दुख बैर-भाव घट जाएगा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह प्रण, साथी अब करना है
नव सृजन पंथ निर्माण करैं।
सब मिलकर विद्या दान करैं।।

शैशव मिट्टी में बीता है,
सब कोश रिक्त, घट रीता है,
हर पथ–बाधा को जीता है,
संगठन युवा बलवान प्रबल,
गाँवों को आश्रम धाम करैं।
सब मिलकर विद्या दान करैं।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमी की उम्र

–डॉ॰ सत्यसागर शर्मा

चित्रगुप्त संसार के सारे प्राणियों को उनकी इच्छानुसार मनचाही उम्र बाँट चुके थे। बेचारा इन्सान एक तरफ बैठा था। जब उसका नम्बर आया तो यमराज के लेखे में पच्चीस वर्ष शेष रह गए थे। चित्रगुप्त ने आदमी को बुलाते हुए कहा–"तुम भी आकर अपनी उम्र ले लो और बही पर अँगूठा लगा दो।"

इन्सान ने चित्रगुप्त से पूछा–"हे चित्रगुप्त, इतना हो बता दो कि हमारी आयु कितनी है?"

चित्रगुप्त ने बही को मोटे चश्मे से झाँकते हुए कहा–"बस, यही करीब पच्चीस।"

आदमी ने चित्रगुप्त की बात सुनते ही अपना माथा पकड़ लिया। बैठते हुए बोला–"बस, सिर्फ पच्चीस वर्ष ही हम जी सकेंगे। तुम्हीं बताओ, इतनी कम उम्र में हम क्या कर सकेंगे? हमारी उम्र तुमने इतनी ही क्यों रखी?"

चित्रगुप्त बोले–"भाई, तुम तो ठहरे आलसी आदमी। तुम पहले आए ही नहीं, हमने सभी जानवरों, पशुओं और पक्षियों को उम्र बाँट दी है। अब केवल पच्चीस वर्ष खाते में शेष रह गए हैं। इससे ज्यादा की गुंजाइश नहीं है।" बेचारा आदमी दुखी बैठा सोचने लगा कि क्या करे?

उसी समय मृत्यु लोक से विचरण करते हुए नारद जी आ गए। चित्रगुप्त नारद को देखकर अपना आसन छोड़कर उठ खड़े हुए और प्रणाम किया। नारद मुनि ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए पूछा–"चित्रगुप्त, आज आपके स्वर्ग लोक में बड़ी चहल-पहल है, क्या बात है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रगुप्त बोले–"आज हमारे लोक में उम्र बाँटने का उत्सव है। सभी लोग अपनी-अपनी जिन्दगी का हिसाब-किताब ले रहे हैं।"

नारद बोले–"अच्छा, तो यह बताओ कि बेचारा इन्सान क्यों मुँह लटकाए बैठा है?"

चित्रगुप्त बोले–"क्या बताएँ मुनिवर, यह ठहरा आलसी ! सभी पशु-पक्षी अपनी उम्र लेकर चले गए। जब केवल पच्चीस वर्ष शेष रह गए, तब यह ऊँघता-ऊँघता आया। बताओ, मैं क्या करता? मेरे खाते में बस इतनी ही उम्र थी, सो मैंने इसे दे दी। अब यह इतनी उम्र से खुश नहीं है, तो बताओ क्या करें?"

नारद जी कुछ गम्भीर दिखाई दिए, कुछ देर टहलते हुए बोले–"एक रास्ता है। यदि कोई प्राणी अपनी उम्र इसे दे सके, तो इसकी उम्र बढ़ सकती है।"

नारद जी की बात सुनकर चित्रगुप्त के चेहरे पर खुशी आ गई। चित्रगुप्त आदमी से बोले–"भाई, क्या तुम्हें मुनिवर का प्रस्ताव स्वीकार है?"

आदमी बोला–"हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

अब सवाल यह था कि उम्र कौन दे? थोड़ी देर बाद चित्रगुप्त जी ने ऐलान किया कि एक आदमी को अपनी उम्र में से जो जितनी उम्र देना चाहे, वह आकर हमें बता दे। सभी प्राणी चुप थे। थोड़ी देर बाद बैल आगे बढ़कर बोला–"मेरी उम्र चालीस वर्ष है। मैं इतनी लम्बी उम्र लेकर क्या करूँगा? उसमें से मैं पच्चीस वर्ष आदमी के लिए देता हूँ।" आदमी प्रसन्न था। उसे पच्चीस वर्ष बैल की जिन्दगी मिल गई।

नारद जी बोले–"भाई, अब तो तुम्हें कोई परेशानी नहीं है?"

आदमी हाथ जोड़कर बोला–"मुनिवर, कुछ और दया हो जाती तो अच्छा होता।"

नारद जी बोले–"अब तो तुम पचास वर्ष की जिन्दगी जिओगे, अब क्या चिन्ता है?"

आदमी बोला–"कुछ और कृपा होती तो अच्छा था।"

थोड़ी देर में गधा आगे बढ़कर बोला–"हे नारद जी, हम भी लम्बी जिन्दगी जीकर क्या करेंगे। अच्छा होता, यदि मेरी कुछ उम्र कम हो जाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी पच्चीस वर्ष की उम्र कम कर दें और उसे आदमी के खाते में डाल दें।"

चित्रगुप्त ने आदमी के खाते में पच्चीस वर्ष उम्र और बढ़ा दी।

नारद जी ने फिर आदमी से पूछा–"अब तो तुम्हारी इच्छा पूर्ण हुई। अब खुश हो?"

आदमी कुछ कहना चाहता था, तभी कुत्ते ने आगे बढ़कर नारद जी से कहा–"शायद आदमी अभी कुछ और अधिक जीना चाहता है। इसलिए मैं भी अपनी जिन्दगी के पच्चीस साल आदमी को देना चाहता हूँ।"

यह सुनकर आदमी के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। वह तुरन्त बोला–"मुनिवर, यदि ऐसा हो जाए तो मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाए।"

नारद जी ने कहा–"ठीक है चित्रगुप्त, तुम इसकी यह कामना भी पूर्ण कर दो और आदमी की जिन्दगी पूरी सौ वर्ष की कर दो।"

चित्रगुप्त ने तुरन्त आदमी की उम्र सौ वर्ष कर उसे मृत्युलोक भेज दिया।

तभी से इंसान जीवन के शुरू के पच्चीस साल अपनी जिन्दगी जीता है, मस्त रहता है। किसी बात की चिन्ता नहीं रहती। उसके बाद के पच्चीस साल आदमी बैल की जिन्दगी जीता है। परिवार बढ़ जाता है। परिवार का भरण-पोषण करने के लिए हर समय आदमी काम में लगा रहता है, बिल्कुल बैल की तरह। फिर पच्चीस साल गधे की जिन्दगी जीता है–ढेर सारी जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा रहता है। हर समय परेशान रहता है। आखिरी के पच्चीस साल कुत्ते ने दिए थे। इसलिए आदमी अपनी जिन्दगी के आखिरी पच्चीस साल कुत्ते की ही तरह का जीवन जीता है। हर तरफ से दुत्कारा जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी घर के ही लोग ठुकरा देते हैं, अपमानित कर देते हैं। खाना समय पर मिले, न मिले, कुछ पता नहीं।

इस तरह, एक ही जीवन में आदमी को अपने अलावा बैल, गधे और कुत्ते का जीवन भी जीना पड़ता है।

–राज्य संसाधन केन्द्र, उ.प्र., साक्षरता निकेतन, लखनऊ-23

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन

–आभा उपाध्याय

जीवन क्या?
अन्जान डगर,
साँसों का जिसमे मेला,
एक सफर, बस एक सफर,
जिसमें हर इन्सान अकेला।

जीवन क्या?
गतिशील नदी,
माप से ज्यादा गहरी-गहरी,
जो जा के सागर से मिल के,
चिर विश्राम ही ले के ठहरी।

जीवन क्या?
एक पुस्तक,
बचपन, यौवन, वृद्धावस्था,
जिसमें क्रम से आते,
समय से पहले जिसके कोई,
पृष्ठ पढ़े न जाते।

जीवन क्या?
एक वीणा,
जिसके वक्त छेड़ता तार,
सुख-दुख का संगीत ही बनता,
जीवन का आधार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन सही कौन गलत

–दिनेश सिंह

गंगा नदी के किनारे एक आश्रम था। उसमें एक महात्मा जी अपने शिष्यों के साथ रहते थे। उनके शिष्यों में एक था–दीनू। वह बहुत सीधा-सादा और समझदार नवयुवक था। मेहनती भी वह बहुत था। रोज तड़के सुबह सोकर उठ जाता। आश्रम की सफाई करता। मंदिर में भगवान को फल-फूल चढ़ाता। आरती करता। फिर उन्हें भोग लगाकर तभी भोजन करता। अपने गुरु जी का भी वह बहुत ध्यान रखता था। उन्हें नहलाता-धुलाता। उनके कपड़े-लत्ते साफ करता। फिर रात को घंटों बैठकर उनके पैर दबाता रहता। बस यही उसकी दिनचर्या थी।

महात्मा जी दीनू के इन नेक गुणों से काफी प्रसन्न थे। इसीलिए वह उनका सबसे प्रिय शिष्य था। अगर उन्हें किसी काम से बाहर जाना होता, तो आश्रम की सारी जिम्मेदारी वह दीनू पर ही छोड़ जाते।

दीनू के प्रति महात्मा जी का लगाव देखकर उनके कुछ एक शिष्य उससे ईर्ष्या करने लगे। वे इसी उधेड़बुन में लगे रहते, कि किस तरह दीनू को नीचा दिखाया जाए। वे बीच-बीच में दीनू की झूठी शिकायत महात्मा जी से करने लगे, ताकि वह उनकी नजरों से गिर जाए।

एक दिन की बात है। महात्मा जी अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनके दो-तीन शिष्य उनके पास पहुँचे। सबने उन्हें प्रणाम किया। फिर एक शिष्य हिचकिचाता हुआ बोला–"गुरुजी।"

"बोलो किशोर।" महात्मा जी उसे घूर कर बोले–"कुछ कहना चाहते हो क्या?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हाँ, गुरुजी। मगर कहने में डर-सा लग रहा है। डर इसलिए गुरुजी, क्योंकि आपको शायद विश्वास न हो। बात ही कुछ ऐसी है।"

"क्या बात है किशोर? साफ-साफ कहो न।"

"गुरुजी, वह दीनू है न।" कहते-कहते किशोर रुक गया।

"बात को गले में मत फँसाओ किशोर। खुलकर कहो।"

"दीनू कह रहा था....." किशोर खँखार कर बोला–"इस आश्रम का एक दिन उसे ही महन्त बनना है, क्योंकि वह आपको, हम सबसे ज्यादा प्रिय है। उसकी इस बात पर कैलाश ने कहा, कि गुरुजी जब तक जिन्दा हैं, तक तक तू महन्त नहीं बन सकता। जवाब में जानते हो गुरुजी उसने क्या कहा?"

"क्या कहा?" गुरु जी के कान खड़े हो गए।

"छि: छि: आपसे कहते हुए बड़ी शर्म आती है गुरुजी। उसने कहा, न जाने यह बुड्ढा कब तक जिएगा। बस यही बात हमें बर्दाश्त नहीं हुई, क्योंकि उसने आपको अपशब्द कहे थे। सुनकर कलेजा फट गया। मैंने कहा–दीनू, गुरुजी को अपशब्द मत कह। ईश्वर करे, हमारे गुरुजी हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहें। इस आश्रम को हमारे गुरुजी के सिवा, किसी की जरूरत ही न पड़े। मेरी बात पर यकीन न हो तो इस कैलाश और उमेश से पूछ लो।"

महात्मा जी ने कैलाश और उमेश की ओर घूरकर पूछा–"किशोर जो कह रहा है, क्या वह सच है?"

उमेश ने कहा–"बिल्कुल सच है, गुरुजी। झूठ बोलूँ, तो मुँह में कीड़े पड़ें।"

अब क्या था। गुरुजी की भौंहें तन गईं। आँखें लाल हो उठीं। मारे क्रोध के चेहरा तमतमा उठा। उन्होंने चीखकर कैलाश से कहा–"जा कैलाश, दीनू को पकड़कर हमारे सामने पेशकर।"

कैलाश घूमा और एक ओर चला गया। थोड़ी देर बार जब वह वापस आया, तो उसके साथ दीनू भी था।

दीनू पर नजर पड़ते ही महात्मा जी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। वह हलक फाड़कर चिल्लाए–"नीच ! पापी ! तुझे मैं बहुत सीधा-साधा और समझदार समझता रहा। तुझ पर विश्वास करता था। मगर तू इतना नीच होगा, इतना गया-गुजरा होगा, इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। तू मेरे मरने के दिन देख रहा है, ताकि तू जल्दी से इस आश्रम का महन्त बन जाए। सपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखना बन्द कर पापी, क्योंकि यह इच्छा तेरी कभी पूर्ण नहीं होगी। तूने मेरे विश्वास को धोखा दिया है, इसलिए जा पाखण्डी, निकल जा इस आश्रम से, और कभी यह अपना मनहूस चेहरा लेकर मेरे सामने मत आना।"

दीनू सकपका गया, काटो तो खून नहीं। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बस एक ही बात उसकी समझ में आई थी। वह यह कि महात्मा जी ने उससे आश्रम छोड़कर निकल जाने को कहा है। इसलिए उसे अपने गुरु के आदेश का पालन करना ही था। उसने मन ही मन उन्हें प्रणाम किया, फिर आँखों में आँसू भर आश्रम से निकल गया।

उधर किशोर, कैलाश और उमेश के चेहरों पर एक विजयी मुस्कान थी। इस समय वह तीनों एक झाड़ी की आड़ में खड़े आपस में बतिया रहे थे। तभी उधर से महात्मा जी गुजरे। किशोर की फुसफुसाहट उनके भी कान में पड़ी–"अपने को बहुत बड़ा महात्मा समझने लगा था पाजी। फिर गुरुजी ने भी तो उसे सबके सिर पर बैठा रखा था।"

"ठीक कहते हो किशोर," कैलाश बोला–"सचमुच गुरुजी उसे बहुत चाहते थे। उसे वह इस आश्रम का महन्त भी बना देते। मगर हमारी चाल कामयाब रही। अब जाए, गंगा की धूल फाँके।"

अब तक चुप उमेश बोला–"चाहे जो भी हो भाई। दीने गुरुजी का आज्ञाकारी शिष्य तो था ही। अब देखो, गुरुजी ने कह दिया, आश्रम से निकल जा, तो वह सचमुच चला गया। उसने अपनी सफाई में भी कुछ नहीं कहा। वाह ! शिष्य हो तो ऐसा।"

कहकर उमेश ठहाका मारकर हँस पड़ा।

महात्मा जी उन तीनों की बातें सुन रहे थे। पूरी बात सुनकर उनका रोम-रोम काँप उठा। उन्हें लगा, मानों उन्होंने कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो। अपराध तो सचमुच उनसे हो ही चुका था। एक निर्दोष को उनके हाथों सजा मिल चुकी थी। वह अपने आपको कोसने लगे। उन्हें किशोर, कैलाश और उमेश पर बहुत गुस्सा आया, लेकिन अभी भी कुछ कहना उचित नही समझा। गुरुजी ने फैसला किया, चलो पहले अपने प्रिय शिष्य दीनू को ढूँढकर वापस लायें, उसके बाद इन दुष्टों को सजा देंगे। यही सोचते हुए वे तेजी से आगे बढ़ गए।

–राज्य संसाधन केन्द्र, उ०प्र०, साक्षरता निकेतन, लखनऊ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गज़ल

–राम नरेश 'उज्ज्वल'

बिगड़ी बात बनाता कौन?
रस्ता सही दिखाता कौन?

वादा कर लेते हैं सब ही,
लेकिन उसे निभाता कौन?

दलदल में रहकर भी हरदम,
कीचड़ से बच पाता कौन?

जीवन के अन्तिम पल में भी,
फूलों-सा मुस्काता कौन?

यहाँ पुजारी सब मतलब के,
रिश्ता भला निभाता कौन?

नीचे तो हैं सभी गिराते,
ऊपर किन्तु उठाता कौन?

इच्छाएँ कुछ रह जाती हैं,
मन चाहा सब पाता कौन?

गम के आलम में खुशियों के,
गीत हमेशा गाता कौन?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे कैसे

–भानु प्रताप मिश्र

बेचारी ने कहाँ-कहाँ नहीं सिर रगड़ा। मन्दिर में याचना की। मस्जिदों में मन्नतें माँगी। गुरुद्वारे में अरदास किया। गिरिजाघरों में प्रार्थना कीं। लेकिन बेटे का तुतलाना ठीक नहीं हुआ।

बच्चे गुलाम को चिढ़ाते, कहते–"तोत्तल आ गया। तोत्तल आ गया। कहो तोत्तल भाई, टहाँ डा रहे हो।" माँ को यह सहन नहीं होता। कलेजे पर चोट लगती। वह तड़पकर रह जाती।

बेचारा गुलाम भी क्या करता। अब उसके पिता भी तो नहीं थे। वह रोते-रोते फिर माँ के आँचल में छुप जाता।

गुलाम माँ से कहता–"माँ, मेली बोली टब ठीट होडी।" माँ अपने कलेजे के टुकड़े को सीने से लगाकर कहती–"भरोसा रख। भगवान कृष्ण तेरी बोली जरूर ठीक कर देंगे। तू उन्हीं से कह। उन्हीं से विनती कर। वही गरीब को धन देते हैं। बाँझ को पुत्र देते हैं। भूखे को भोजन देते हैं। प्यासे को पानी देते हैं। वही जीने के लिए हवा और प्रकाश देते हैं।"

गुलाम को अपनी खिल्ली पसन्द न थी। माँ से बोला–"टो मैं ट्या टरूँ?" माँ बोली–"वह गाँव के बाहर जो एक मन्दिर है न, वहीं भगवान कृष्ण हैं। वहीं जाकर अपनी बात कह।"

"अच्छा माँ!" कहकर गुलाम चला गया।

"ठीट टै डेव। ठीट टै डेव। ठीट टै डेव, भडवान टिसिन। हे भडवान टिसिन, हमैं डीट टै डेव।" कृष्ण की मूर्ति के सामने खड़ा गुलाम यही रटता रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्थर की मूर्ति क्या बोलती। मूर्ति चुपचाप खड़ी रही। गुलाम रट लगाए था–"ठीट टय डेव टिसिन। हे टिसिन टनी हमालौ ठुनौ। ठीट टै डेव टिसिन।" अन्त में हार कर गुलाम घर लौट आया।

माँ से बोला–"टुम्हाले टिसिन भडवान टुठ नहीं बोले। ठीट नाहीं टिया हमाल टुटलाना। टिसिन टुठ नाही टिहिन।" माँ क्या कहती। धीरज बँधाते हुए बोली–"जरूर ठीक करेंगे। तू सच्ची लगन से उनका नाम जप। जब तक ठीक न करें।"

गुलाम दूसरे दिन सबेरे ही मन्दिर पहुंचा। उसी दिन की तरह कृष्ण की मूर्ति के सामने खड़ा होकर कहने लगा–"हमैं ठीट टै डेव, टिसिन, हे टिसिन, टिसिन, टिसिन, टिसिन.....। हमैं ठीट टलौ टिसिन.....टिसिन, टिसिन.....।"

पुजारी ने देखा। सोचा, यह अबोध बालक कब तक पत्थर के सामने खड़ा रहेगा। ऐसे तो यह बीमार हो जाएगा। पुजारी ने एक नाटक किया। मूर्ति के पीछे खड़ा हो गया और बोला–"मैं तुमसे खुश हूँ। तुम्हें क्या चाहिए?"

गुलाम को लगा, भगवान बोल रहे हैं। गुलाम ने तपाक् से कहा–"हे टिसिन भडवान, हमटा ठीट टै डेव।" फिर आवाज गूंजी–"ठीक हो जाओगे। जाओ, किसी डाक्टर को दिखाओ।"

गुलाम दौड़ा-दौड़ा अपनी माँ के पास पहुँचा। बोला–"माँ-माँ, टिसिन भडवान टहिन हैं टि डाट्टर टा डेठाव, ठीट होइ डइहौ।" माँ ने कहा–"भगवान ऐसा नहीं कह सकते।" गुलाम अड़ गया।

"टैसे नहीं टह सट्टे। हमें डाट्टर टे पास लै टलो। हम डरूर डाबै।" गुलाम बोलता ही रहा। अन्त में माँ की नहीं चली। उसे डॉक्टर के पास ले ही जाना पड़ा।

डॉक्टर ने कहा–"गुलाम जरूर ठीक हो जाएगा। बस भगवान पर भरोसा रखो। माँ जी।" गुलाम की माँ बोली–"डाक्टर साहब, मेरे पास पैसे नहीं हैं। दवा-दारू कैसे होगी।" डॉक्टर ने कहा–"पैसे की फिकर मत करो। इसका इलाज होने दो।" गुलाम का इलाज शुरू हो गया।

गुलाम ठीक हो चला। गुलाम और उसकी माँ डॉक्टर के पास गयी। माँ बोली–"डाक्टर साहब, आपका लाख-लाख शुक्र है। मेरा लाल अब ठीक हो गया है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलाम बोला–"हमारे किसिन भगवान ने हमको ठीक किया है।"

माँ बोली–"नहीं, डॉक्टर साहब ने ठीक किया है।"

"नहीं, किसिन भगवान ठीक किए हैं।"

"नहीं, डॉक्टर साहब ठीक किए हैं।"

"नहीं, किसिन भगवान।"

"नहीं, डाक्टर साहब।"

"नहीं, नहीं, किसिन, किसिन, किसिन..।"

इसी बीच डाक्टर ने कहा–"तुम माँ-बेटे क्यों लड़ रहे हो? गुलाम ठीक हो गया, बस। चाहे किसी ने भी ठीक किया हो।" गुलाम बोला–"ऐसे कैसे हो सकता है। हमारे किसिन भगवान ने कहा था, डॉक्टर के पास जाओ, ठीक हो जाओगे। तो हमारे किसिन ने ही ठीक किया है।"

माँ बोली–"डाक्टर साहब इलाज न करते तो कहाँ से ठीक होते।" इसी तरह बहुत देर तक नोंक-झोंक चलती रही।

डाक्टर ने सोचा, यह गुलाम की आस्था का सवाल है। थोड़ी देर बाद बोले–"हाँ माँ जी, गुलाम ठीक कहता है। इसके किसिन भगवान ने ही तो हमसे कहा था इलाज करने को। उन्हीं ने ही दवायें दी थीं। तभी हम इलाज कर पाए।" गुलाम और गुलाम की माँ, दोनों डाक्टर का मुँह देखते रह गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आने वाला कल उज्ज्वल हो

–मधु दीक्षित

नए साल के, नव प्रकाश में,
आलोकित हर क्षण, हर पल हो।
ज्ञान-प्रकाश भरे जन-जन में,
सत्य भावना का सम्बल हो।।

मानव का मानव से हित हो,
मन का कोमल भाव प्रबल हो।
हर्ष और उत्कर्ष दिखे अब,
नगर ग्राम, वन में मंगल हो।।

शस्य-श्यामला भारत भू का,
लहराता धानी आँचल हो।
स्वच्छ हवा हो, मृदुल चाँदनी,
सरिताओं का जल निर्मल हो।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋषियों की यह भूमि, यहाँ पर-
सत्य, अहिंसा-धर्म सफल हो।
केसन चंदन की धरती पर
अमन-चैन की आस अटल हो।।

अर्जुन सा हो वीर युवा हर,
नारी में दुर्गा सा बल हो।
था अतीत गौरवशाली तो,
आने वाला कल उज्ज्वल हो।

–डी-163, डी-सेक्टर, एल.डी.ए. कालोनी, लखनऊ-12

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर्ज

–डॉ॰ विद्याबिन्दु सिंह

"मुझे मत मारो, मत मारो", कहता हुआ एक बालक अपने हाथों से प्रहार झेल रहा था।

तभी लोगों की भीड़ जुट आई। मारने वाले के हाथ रुक गए थे और अब वह मारने वाला फल के ठेले वाले से उलझ रहा था–"तुमने मेरे नौकर को बहकाया।"

ठेले वाला कह रहा था–"वह खुद मेरे पास आया था। वह भूखा था, आते ही मुसम्मी का रस निकालने के बाद गिरने वाले गुदे को माँगा था, खाने के लिए। मुझे दया आई, मैंने मुसम्मी का रस थोड़ा सा दे दिया। पीकर उसकी आँखें खुल गईं। तब से वह मेरे पास काम कर रहा है। नौकर को भूखा रखोगे, तो जहाँ उसका पेट भरेगा, वहाँ जाएगा ही।"

वह बोला–"वाह रे दानी हरिशचन्द्र ! एक तो मेरा नौकर भगा के रख लिया, ऊपर से हमें बदनाम भी करता है। इतनी ही हमदर्दी है, तो ला दे एक हजार रुपए, जो इसके बाप ने मुझसे कर्ज ले रखा है। वह तो मर गया, इसकी माँ भाग गई, किसी और के साथ..."

लड़का रोते-रोते चीख उठा–".....नहीं-नहीं, मेरी माँ तो मेरे मामा के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पास गई है, पैसा लाने के लिए। इसने मुझे रोक लिया है। मेरी माँ आएगी पैसे लेकर दीवाली में।"

फल वाला चुप हो गया था और उस लड़के के आँसू अपने गमछे में पोंछने लगा था। उसे याद आ रहे थे अपने दोनों बेटे, जिन्हें वह उनकी माँ के साथ गाँव छोड़ आया था।

फलवाला सोच रहा था–बड़े बेटे को पास वाले कस्बे में हलवाई की दुकान पर काम पर लगा आया था। छोटा गाँव के ठाकुर की भैंसे चराता था। उसके ऊपर भी ढाई हजार का कर्ज था, जो बड़ी लड़की की शादी में उसे लेना पड़ा था। डेढ़ हजार रुपया हलवाई से लिया था और एक हजार ठाकुर साहब से। दोनों पचास-पचास रुपए महीने के वेतन से बाप का कर्ज चुका रहे थे।

फलवाले का मन ग्लानि से भर उठा। अभी वह कुल बारह सौ रुपए बचा पाया था। अबकी दीवाली में घर जाकर दोनों बेटों की कर्ज से मुक्ति की कोशिश वह जी जान से कर रहा था। उसका हृदय काँप उठा। क्या मेरे बीरू, धीरू को भी इसी तरह ..... आगे वह सोच नहीं सका..... उसने बच्चे को कसकर भींच लिया। लाल-पीले हो रहे उस आदमी का हाथ पकड़कर बोला–"कल इसी समय आकर अपना हिसाब ले जाना।"

बच्चा और जोर से फफककर रो पड़ा। फलवाले घीसू को लगा, उसके दोनों बेटे हाथ उठाकर रोते हुए उसे बुला रहे हैं–"बाबू, जल्दी आ जाओ।" उसने अपने कान बंद कर लिए।

वह आदमी कल आने के लिए कहकर जा चुका था। बच्चा अभी भी सुबक-सुबक कर रो रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नया सबेरा

–बाबू लाल शर्मा 'प्रेम'

उठो राही चलो आगे,
सबेरा मुस्कराया है।
किरन फूटी दिशाओं में
नया आलोक छाया है।।

महकते फूल, पंछी
गीत गाते जा रहे सारे,
जगो तुम भी, न सोये-
ही रहो आलस्य के मारे,
अँधेरा छँट रहा पल-पल
उजाला जगमगाया है।

उमंगों से भरे झोंके,
पवन तुमको बुलाती है,
कदम पथ पर धरो तो स्वयं
मंजिल पास आती है,
नये युग का नया सूरज
यही संदेश लाया है।
उठो रही चलो आगे
सबेरा मुस्काया है।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरगद की गवाही

– किरन

"लाला गिरधारी लाल और सुखई अहीर को दरबार में हाजिर किया जाए।" राजा ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया।

थोड़ी देर में सिपाहियों ने दोनों को राजा के सामने पेश कर दिया। सिर से पाँव तक दोनों को देखकर राजा ने सुखई अहीर से पूछा, "लाला गिरधारी लाल से तुम्हारा क्या झगड़ा है?"

"महाराज ! दो महीने पहले मैं तीर्थयात्रा पर गया था। जाते समय मैं अपनी पत्नी के सोने के गहने लाला के पास रख गया था। लेकिन लौटने पर जब मैंने अपने गहने माँगे तो लाला ने देने से मना कर दिया।" सुखई अहीर ने बताया।

"क्या तुमने गहने रखते समय कोई लिखा-पढ़ी की थी?" राजा ने पूछा।

"नहीं महाराज ! मुझे लाला के ऊपर पूरा विश्वास था, लेकिन अब इसकी नीयत खराब हो गई है। यह मेरे गहने हड़पना चाहता है।" सुखई बोला।

सुखई की बात खत्म होते ही राजा ने गिरधारी लाल से पूछा–"क्यों लाला, इस सम्बन्ध में तुम्हें क्या कहना है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"महाराज ! सुखई सरासर झूठ बोल रहा है। इसने मेरे पास कोई गहना नहीं रखा। मैं काफी समय से लेन-देन का धन्धा कर रहा हूँ। आज तक किसी ने मेरे ऊपर ऐसा आरोप नहीं लगाया। जब इसने मेरे पास गहने रखे ही नहीं, तो मैं कहाँ से दूँ?" लाला गिरधारी लाल ने अपनी सफाई पेश की।

राजा कुछ देर तक सोचता रहा, फिर से सुखई से बोला–तुमने किसके सामने गहने लाला को सौंपे थे?"

"महाराज ! गाँव के पूरब में एक कुएं के पास बरगद का पेड़ है, मैंने उसी पेड़ के नीचे लाला को अपने गहने दिए थे", सुखई ने कहा।

"क्यों लाला, क्या यह सच है?"

"मैंने अभी तक न कुआँ देखा है, न बरगद का पेड़।" लाला ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा और कोई गवाह है?" राजा ने सुखई से पूछा।

"नहीं महाराज।" सुखई ने हाथ जोड़कर कहा।

"अच्छा सुखई, लाला को गहने देते हुए बरगद के पेड़ ने जरूर देखा होगा, तुम उसी बरगद को गवाह के रूप में हाजिर करो।" राजा ने आदेश दिया।

"पर महाराज ! पेड़ गवाही देने कैसे आ सकता है?" सुखई बोला।

"तुम जाकर उससे कहोगे तो वह जरूर चला आएगा।" राजा ने कहा।

राजा के कहने पर सुखई बरगद के पेड़ को बुलाने चला गया। दो घण्टे बीत गए, मगर सुखई नहीं लौटा तो राजा ने कहा–"लगता है बरगद का पेड़ काफी दूर है, तभी इतनी देर लग रही है।"

"नहीं महाराज ! ज्यादा दूर नहीं है।" अचानक लाला के मुँह से निकला।

"जब तुमने वह बरगद का पेड़ देखा ही नहीं है, तो तुमने यह कैसे कहा कि वह ज्यादा दूर नहीं है?" राजा ने गम्भीर होकर लाला से पूछा।

लाला कोई जवाब न दे सका।

"साफ जाहिर है कि सुखई ने बरगद के पेड़ के नीचे गहने दिए थे। अन्यथा तुम बरगद के बारे में कैसे जानते? खैरियत चाहते हो तो साफ-साफ बता दो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाला ने सिर झुकाकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया। तभी घबड़ाया हुआ सुखई आ पहुँचा और हाथ जोड़कर कहने लगा–"महाराज ! मैंने बरगद के पेड़ से बहुत प्रार्थना की। मगर वह टस से मस नहीं हुआ।"

"घबड़ाओ नहीं। वह यहाँ आकर गवाही दे गया है, लाला ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। यह तुम्हारे गहने लौटा देगा।"

न्याय का यह खेल चल रहा था। एक टीले पर एक बच्चा राजा बना बैठा था। उसके दो साथी लाला और सुखई बने थे। पास ही एक चट्टान की ओट में छिपा एक विद्वान् ब्राह्मण बालकों का यह खेल देख रहा था। वह राजा बने उस बालक से बहुत प्रभावित हुआ।

राजा बना हुआ वह बालक था चन्द्रगुप्त और ब्राह्मण था चाणक्य। चन्द्रगुप्त की सहायता से ही चाणक्य ने मग्ध के राजा नन्द से अपने अपमान का बदला लिया था। यही चन्द्रगुप्त आगे चलकर भारत का न्यायप्रिय सम्राट बना।

–219, स्टेनली रोड, कमलानगर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन का पथ नहीं सरल

–भारती पाठक

जीवन का पथ नहीं सरल, तू बाँध के हिम्मत चल दे।
होना है यदि तुझे सफल, तू बाँध के हिम्मत चल दे।।
कोई नहीं यहाँ है तेरा,
ना साथी, ना संगी,
झूठे हैं सब रिश्ते-नाते,
स्वार्थ में दुनिया रंगी,

सुधा समझ कर पी ले विष, तू बाँध के हिम्मत चल दे।
तू चाहे तो छू सकता है,
चन्दा और सितारे,
तू चाहे तो पा सकता है,
सुख दुनिया के सारे,

छिपी है तुझसे बुद्धि विमल, तू बाँध के हिम्मत चल दे।
जीवन में कुछ नहीं असम्भव,
यदि तू करना चाहे,
पंगु चढ़े पर्वत पर,
अन्धा नापे दुर्गम राहें,
तुझमें भी है शक्ति प्रबल, तू बाँध के हिम्मत चल दे।
जीवन का पथ नहीं सरल, तू बाँध के हिम्मत चल दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोटी की कीमत

–संदीप कुमार मिश्र

छेदी सेठ बड़ा पैसे वाला आदमी था। गाँव का जमींदार भी था। बड़े-बड़े लोगों से उसकी दोस्ती थी। पैसे की कीमत वह समझता ही नहीं था। बहुत सारे आदमी उसके यहाँ काम करते थे। उसी में से एक ननकऊ भी था। कल वह काम पर नहीं आया था। आज आते ही छेदी सेठ के पास खड़ा हो गया। उसे देखते ही छेदी सेठ का पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उन्होंने कड़क कर पूछा–"क्या रे ननकऊआ, कल कहाँ मर गया था?"

"क्या करें मालिक, कल हमारे बेटे को बुखार हो गया था। इसलिए नहीं आ पाया।" ननकऊ ने डरते-डरते कहा।

ननकऊ कुछ और भी कहना चाह रहा था, मगर कह नहीं पा रहा था। वह वहीं खड़ा रहा। तभी छेदी सेठ फिर बरसा–"अब खड़ा-खड़ा मेरा मुँह क्यों ताक रहा है? क्या आज भी काम करने का इरादा नहीं है?"

ननकऊ ने थोड़ी सी हिम्मत जुटाई और कहा–"मालिक, एक काम है। सोच रहा हूँ कहूँ–कि न कहूँ।"

"क्या काम है? बोलो जल्दी से।" छेदी सेठ ने पूछा।

"मालिक, मुझे सौ रुपये उधार दे दीजिए। काम करके.....।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अदा कर दूँगा।" उसकी अधूरी बात को लपकते हुए छेदी ने कहा–"अभी पुराना तो चुकाया नहीं, जब देखो, चले आते हैं मुँह उठाए। मालिक पैसे दे दो, मालिक पैसे दे दो। क्या मेरे पास रुपयों के पेड़ लगे हैं, जो तोड़कर दे दूँ। हुँह.....।"

इतना सुनकर ननकऊ रुँआसा हो गया। बोला–"मालिक, मेरे पास जो भी पैसे थे, वह सब कल दवा में चले गए। कल से ही पूरा परिवार भूखा है। मुझ पर दया कीजिए मालिक। आपका पिछला हिसाब भी चुका दूँगा।"

"ये रोज तुम्हारी रोज की आदत है। आओगे और बहाने बनाने लगोगे। लेकिन इस बार बहाने नहीं चलेंगे। एक भी पैसा नहीं मिलेगा।" छेदी सेठ ने साफ-साफ कह दिया।

ननकऊ रोते-रोते बोला–"मालिक ! कम से कम बच्चों के ऊपर तो दया कीजिए।"

"तुम्हारी जुबान ज्यादा बढ़ गई है। तुम मान नहीं रहे हो। तुम्हें ठीक किए देता हूँ। रामू ! जरा इधर रजिस्टर तो ला। अभी हिसाब-किताब किए देता हूँ। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।"

ननकऊ छेदी सेठ के पैरों पर गिर पड़ा–"मालिक, ऐसा अनर्थ मन कीजिए। मेरे बच्चे बिना रोटी के मर जाएंगे।"

छेदी सेठ एक बेरहम आदमी था। ननकऊ की गिड़गिड़ाहट का उस पर कोई असर नहीं हुआ। रजिस्टर के पन्ने उलटते-पलटते बोला–"हिसाब-किताब बराबर, नौकरी खत्म। अब बैठकर खिलाओ रोटी। बड़े आए रोटी वाले।"

"मालिक, आप क्या जानें रोटी की कीमत। रोटी की कीमत तो वह जानता है, जो भूखा रहता है। कभी भूखे रहेंगे तो जान जाएँगे।" इतना कहकर ननकऊ वहाँ से रोता हुआ चला गया।

समय का चक्र तो कभी रुकता नहीं हमेशा चलता रहता है। छेदी सेठ को न जाने कैसे जुआ खेलने की लत पड़ गई। फिर इस लत ने उसका सब कुछ छीन लिया। धन-दौलत, घर, जमीन-जायदाद सब जुए में हार गया। दर-दर का भिखारी हो गया।

इस समय भी वह बैठे-बैठे सोच रहा था–"कल का छेदी सेठ आज का भिखारी बन गया है। अब न उसके पास हवेली है, न गाड़ी है, न ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई साथ देने वाला है।" सोचते-सोचते उसी जगह उसे नींद आ गई।

सुबह उठा तो सूरज निकल चुका था। उठने की कोशिश की, मगर उठ नहीं सका। पेट में कुछ था ही नहीं। बड़े जोरों की भूख लगी थी। किसी तरह हिम्मत जुटाकर उठा और चल दिया।

चलते-चलते वह एक जगह गिर गया। सामने टूटा-फूटा मिट्टी का घर था। उसी समय उस घर से कोई निकला। सामने किसी को बेहोश देखकर चौंक पड़ा। पास आकर देखा तो पहचान गया। वह जल्दी से उसे उठाकर घर में लग गया। मुँह पर पानी डाला। पानी डालते ही होश आ गया। होश आते ही सामने ननकऊ को देखकर वह चौंक पड़ा–"अरे ननकऊ तुम?"

"हाँ मालिक, मैं। मगर आपकी यह हालत।"

छेदी रो पड़ा। बोला–"मत कहो मुझे मालिक। मैं मालिक नहीं, भिखारी हूँ। तुम सच कहते थे, जिस दिन भूखे रहोगे, उस दिन रोटी की कीमत जान जाओगे। आज मैं जान गया हूँ, रोटी की कीमत।"

ननकऊ घर के अंदर गया। बाहर आया तो उसके हाथ में दो रोटियाँ थीं। सामने रोटी को देखकर छेदी फफककर रो पड़ा। कहने लगा–"ननकऊ, तुम महान हो। एक दिन, तुम्हारे बच्चे भूखे थे। मैंने उनकी भूख नहीं मिटाई, बल्कि उनके सामने की रोटी को खींच लिया। आज तुम....."

"कोई बात नहीं मालिक। ईश्वर के ऊपर भरोसा रखो, सब ठीक हो जाएगा।"

दूसरे दिन सुबह जब ननकऊ काम करने जाने लगा, तो छेदी ने कहा–"ननकऊ, क्या तुम मुझे काम पर नहीं ले चलोगे। मैं भी चलूँगा।"

"आप.....।"

"हाँ ननकऊ भाई, मुझे अब रोटी की कीमत मालूम हो चुकी है।"

इतना कहकर छेदी उठा और ननकऊ के साथ चल पड़ा।

–धनीपुर, जंगीगंज, संत रविदास नगर (भदोंही)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत

–दीप्ती सिंह

सबका भला हो, सबका भला।
सबको सिखा दो ऐसी कला।।

लाज बचे नारी की, निर्धन की जान बचे।
आन बचे, शान बचे, सबका सम्मान बचे।
अब कहीं कोई नहीं जाए छला।
सबको सिखा दो ऐसी कला।।

बागन में फूल खिलें, आँगन में पूत हँसें।
प्यार पगी ममता के मोहक मन रूप बसें।
दुख में सभी का रूँध जाए गला।
सबको सिखाओ ऐसी कला।।

बात साफ-साफ चले, हाथ साथ-साथ चले।
साफ लेन-देन चले, खान-पान साथ चले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ-साथ प्रेम रीति तुम दो चला।
सबका भला हो, सबका भला।।

गीत चले प्रीत चले, नृत्य औ संगीत चले।
परहित की रीत चलो, हर दिल परतीत पले।
घर में हो देहरी पर दीपक जला।
सबका भला हो सबका भला।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बृजनंदन

–अशोक कुमार 'अलैक्जेंडर'

एक गांव में एक साधु रहता था। वह भगवान का भजन करता था। जीविका चलाने के लिए कपड़े का व्यवसाय भी करता था। वह प्रतिदिन दूर के बाजार से साड़ियां व दुशाले लाकर पास के बाजार में बेचता था। इसी तरह उसके दिन गुजर रहे थे।

उसी गाँव में एक साहूकार भी रहता था। उसके लड़के का नाम बृजनंदन था। वह बहुत ही शरारती तथा घमण्डी था। एक दिन वह अपने साथियों के साथ बाजार गया। सभी लड़के बाजार में जाकर इधर-उधर घूमने लगे। तक तक बृजनंदन की नजर उस साधु पर पड़ी, जो साड़ियाँ और दुशाले बेच रहा था।

बृजनंदन उसके पास गया। एक साड़ी उसने हाथ में उठा ली। साधु से उसका दाम पूछा। साधु ने दस रुपए मूल्य बताया। बृजनंदन ने साड़ी के दो टुकड़े कर दिये और कहा, "मुझे केवल आधी साड़ी की जरूरत है, इसका दाम बताओ।" साधु ने बिना नाराज हुए कहा, "पांच रुपए।"

बृजनंदन ने उस साड़ी के टुकड़े को फिर दो टुकड़ों में फाड़ दिया और कहा, "मुझे इतने की नहीं, बल्कि इसके आधे की जरूरत है, इसका दाम बताओ।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साधु ने उत्तर दिया, "ढाई रुपए।"

बृजनंदन ने पुनः उस टुकड़े को दो टुकड़ों में फाड़ दिया और पूछा। साधु ने पुनः उसका आधा दाम बता दिया। इस तरह बृजनंदन साड़ी को टुकड़े-टुकड़े में फाड़ता गया। साधु उसका आधा दाम करके बताता गया। लेकिन एक बार भी नाराज नहीं हुआ। इस तरह बृजनदंन ने साड़ी को फाड़कर इतने टुकड़े कर दिये कि वह अब किसी काम की नहीं बची। अंत में बृजनंदन ने कहा–"मुझे इसमें से किसी टुकड़े की जरूरत नहीं है, क्योंकि इसमें से कोई भी टुकड़ा हमारे काम का नहीं है, लेकिन मैंने जो तुम्हारा नुकसान किया है, उसका दाम बताओ और पैसे ले लो।"

साधु ने उत्तर दिया, "यह साड़ी अब तुम्हारे क्या, किसी के काम की भी नहीं रह गई। रह बात पैसे की, तो जब तुम साड़ी नहीं ले रहे हो तो मैं पैसे कैसे ले सकता हूँ।"

इस पर लड़के ने कहा, "मैंने तो तुम्हारा नुकसान किया है, उसकी पूर्ति कैसे करोगे?"

साधु ने उत्तर दिया, "पहले तुम बताओ, यदि तुम बिना साड़ी लिये मुझे पैसा दोगे, तो तुम्हारी क्षतिपूर्ति कैसे होगी? तुम्हारे माता-पिता पूछेंगे तो क्या जवाब दोगे?"

बृजनंदन ने हँसते हुए कहा, "हमारी बात मत करो। अपने विषय में सोचो। तुम्हारा कितना नुकसान हुआ है। इसका दाम बताओ और पैसे ले लो।"

साधु ने लड़के को समझाते हुए कहा, "मैंने इस साड़ी का दाम दस रुपए बताया है। लेकिन तुम दस रुपए देकर इसका मूल्य नहीं चुका सकते, क्योंकि इस साड़ी को तैयार करने में सिर्फ दस रुपए ही नहीं लगे हैं। बल्कि इसे बनाने के लिए पहले खेत की जुताई की गयी होगी, बीज डाला होगा, सिंचाई की होगी। कपास का पौधा बनने में चार से छः माह का समय लगा होगा। फिर इसका सूत तैयार किया गया होगा। तब कपड़ा बुना गया होगा। इसके अतिरिक्त इसमें किसानों और बुनकरों का अमूल्य परिश्रम लगा होगा। तुम्हीं बताओ, क्या तुम दस रुपए देकर इसका मूल्य चुका सकते हो?"

बृजनंदन साधु की बातों को सुनकर बहुत दुखी हुआ। उसने क्षमा माँगी। साधु ने पुनः उससे कहा, "मैं तुम्हें क्षमा कर देता हूँ। लेकिन एक बात और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताओ, यदि मैं तुमसे रुपए लेकर अपनी क्षतिपूर्ति कर लेता तो क्या तुम्हारे मन से अंहकार दूर हो जाता।?"

यह सुनकर बृजनंदन साधु का पैर पकड़कर रोने लगा और कहा, "मैं भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा।"

साधु यह सुनकर बहुत खुश हुआ और कहा–"मैं तुमसे यही चाहता था। जाओ, सुखी रहो।"

–152, फत्तेहपुर बिछुआ, टैगोर टाउन, इलाहाबाद–211 002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुस्कराते रहो

–आलोक कुमार श्रीवास्तव

गीत गाते रहो, गुनगुनाते रहो।
सुख में, दुख में, सदा मुस्कराते रहो।।

बहती नदिया कहे, मत रुको राह में,
हर सफलता छुपी रहती है चाह में,
व्यर्थ में एक भी पल गंवाओ नहीं,
कर्म का धर्म अपना निभाते रहो।
सुख में, दुख में, सदा मुस्कराते रहो।।

शूल बनना नहीं, फूल बनकर खिलो,
दोस्त हो चाहे दुश्मन, सभी से मिलो,
आँसू पोंछो सभी के, दुखी जो मिले,
प्यार अपना सभी पर लुटाते रहो।
सुख में, दुख में, सदा मुस्कराते रहो।।

पथ कठिन देखकर मन में डरना नहीं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर के अपना कभी पथ बदलना नहीं,
चाहे बाधायें कितनी मिलें राह में,
तुम कदम अपने आगे बढ़ाते रहो।
सुख में, दुख में, सदा मुस्कराते रहो।।

इतने ऊँचे उठो, छू सको तुम गगन,
काट दे पत्थरों को, हो ऐसी लगन,
मंजिलें ढूँढने की जरूरत नहीं,
पास मंजिल को अपने बुलाते रहो।
सुख में, दुख में, सदा मुस्कुराते रहो।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इच्छा शक्ति

–शिव प्रसाद

एक पुरानी कहावत है कि कल्पवृक्ष मनुष्य की सभी इच्छाएं पूरी करता है। उसके नीचे बैठकर जो इच्छा की जाती है, वह पूरी हो जाती है। एक बाद एक आदमी कल्पवृक्ष की छाया में आकर बैठा। उस आदमी को यह बात मालूम नहीं थी कि यह इच्छाएँ पूरी करने वाला वृक्ष है। कल्पवृक्ष के नीचे आकर वह सोचने लगा–'यह जीवन कितना कष्टकारी है। इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। इससे तो मर जाना ही अच्छा है।'

कल्पवृक्ष ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। वह आदमी वहीं पर मर गया। कुछ दिनों बाद एक दूसरा आदमी उसी वृक्ष की छाया में आकर रुका। वह धूप में चलकर आया था। कल्पवृक्ष की छाया में उसे बड़ी राहत महसूस हुई। उसने सोचा, 'अब यहीं आराम कर लूँ। कुछ खा-पी लूँ, तब आगे चलूँ।'

कल्पवृक्ष ने उसकी भी इच्छा पूरी कर दी। उसे आराम भी मिला। खाने-पीने का बढ़िया सामान भी मिला, कुछ देर आराम करने के बाद वह वहाँ से चला गया।

अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर कितनी अद्भुत शक्ति वाला है कल्पवृक्ष। असल में वह शक्ति सिर्फ कल्पवृक्ष में ही नहीं, बल्कि हर मनुष्य के अंदर है। वह शक्ति उनकी इच्छाओं में थी। उन्होंने जैसी इच्छा की, वैसा उन्हें फल मिला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह बात तब भी सही थी और आज भी सही है। आज भी हर मनुष्य के पास मन है। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। सच्चे मन से जो इच्छा की जाती है और उसके लिए सतत प्रयास किया जाता है, वह अवश्य ही पूरी होती है।

यह बात प्रमाणित भी है। मनुष्य की इच्छा से ही संसार की सभी चीजें बनीं। मनुष्य ने इच्छा की, वह चिड़ियों की तरह आसमान में उड़े। इसके लिए उसने हवाई जहाज बनाये। मनुष्य ने पानी में मछलियों की तरह तैरना चाहा और पानी के जहाज बने। मनुष्य को तेज चलने की इच्छा हुई। उसने मोटर, रेलगाड़ियां बनाईं। इसी तरह दूसरे आविष्कार भी हुए। एक कहावत है–"आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" सच ही है। मनुष्य को जिस चीज की इच्छा होती है, वह प्राप्त करने की कोशिश करता है। लेकिन इच्छाओं से ही सब कुछ नहीं होता।, बल्कि उसके लिए मेहनत भी करनी पड़ती है। मन की इच्छा तो केवल काम को शुरू करती है। उसे पूरा तो मेहनत के द्वारा ही किया जाता है। हाँ, किसी काम को पूरा करने की दृढ़ इच्छा साधारण इच्छा से भिन्न होती है। इसमें शक्ति होती है, और जोर होता है, जो मनुष्य को चैन नहीं लेने देता।

सफल होने के लिए हमें अपने मन में पहले इच्छा जगानी होगी। दृढ़ इच्छा मन में हो तो दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। हर मनुष्य के हृदय में एक शक्ति छिपी हुई है। वह है इच्छा शक्ति। जीवन में सफल होने के लिए जरूरी है कि अपने मन की इच्छा शक्ति को पहचाना जाय और उसे उपयोग में लाया जाए।

–555क/12, कनौसी, मानक नगर, लखनऊ–226011

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी आदत

–राम किशोर शुक्ल 'विशारद'

आओ भइया बहनो आओ,
आलस को तुम मार भगाओ।
चुस्ती-फुर्ती और यतन से,
अपने सारे काम बनाओ।

आज काम जो भी करना है,
उसको लगे हाथ निपटाओ।
काम समय से पूरा करके,
सुख एवम् सन्तुष्टी पाओ।

जिसे आज करना, कर डालो,
कल पर उसको कभी न टालो।
खाली समय व्यर्थ न जाये,
ऐसी अपनी आदत बना डालो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगो काम में पूरे मन से,
आशा व विश्वास जगाकर।
कार्य बीच में न रोक देना,
रुकना अपनी मंजिल पाकर।

मेहनत और लगन के द्वारा,
ही सब लोग विजय पाते हैं।
कठिन काम को पूरा करके,
दुनिया में आदर पाते हैं।

–गंगागंज, रूमा, कानपुर नगर–208 001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूत उतर गया

–भारती पाठक

खर्र-खर्र-खर्र-खर्र ! जगत उठ बैठा। कैसी आवाज है? लगता है कोई सपना देखा, उसने सोचा। आवाज बन्द हो गयी थी। वह निश्चिन्त होकर लेट गया। कुछ समय और बीता। फिर आवाज आने लगी। खर्र-खर्र-खर्र-खर्र। जगत फिर उठ कर बैठ गया।

इधर-उधर देखा, कोई नहीं था। शायद कोई जानवर आस-पास है, उसने सोचा। खर्र-खर्र-खर्र-खर्र, जैसे कोई रुक-रुककर चल रहा हो। चारपाई पर बैठे-बैठे जगत ने सोचा–कोई तो है, जो चल रहा है। वह दिख क्यों नहीं रहा।

आवाज फिर बन्द हो गयी थी। धीरे-धीरे उसे झपकी आने लगी। अचानक फिर खर्र-खर्र की आवाज से आँख खुल गयी। उसे खयाल आया, कहीं भूत तो.....। नहीं-नहीं, ये मेरा भ्रम है। उसने अपनी सोच को झटक दिया। पर कुछ तो है, यह बात भूल न सका।

उसने चारों ओर देखा। कोई नहीं था। भूत का विचार प्रबल हो उठा। लगा, हाथ-पैर सुन्न हो गए। चारपाई से वह हिल नहीं पा रहा था। मानो, बिस्तर से चिपक गया हो। भय से आँखें बंद हो गईं।

घनी अंधेरी रात थी। आस-पास कोई भी न था। वह तो अपने मामा के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर आया था। उसने खुद ही बाहर सोने की जिद की थी।

अचानक फिर वही आवाज आयी–खर्र-खर्र-खर्र-खर्र.....। जगत की साँस जैसे रुक सी गयी। वह पसीने से नहा गया। चादर को सिर से पैर तक लपेट लिया।

धीरे-धीरे रात बीती। भोर हो गयी। दिन चढ़ आया। उसकी मामी उसे जगाने आयी। कई बार आवाज दी। कोई जवाब न पाकर उसका शरीर छुआ। देह आग सी तप रही थी। वैद्य जी को बुलाया गया। दवा ली। शाम तक वह कुछ ठीक हुआ। सोचा, थोड़ा घूम लें। रास्ते में गौतम मिल गया।

"कैसे हो जगत? बीमार से लग रहे हो?"

"हाँ गौतम, रात से कुछ बुखार है।" जगत ने कहा।

"क्यों, किसी भूत-प्रेत से मुलाकात हो गयी क्या?" यह कह कर गौतम हँस पड़ा।

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करता।" बात को छिपाते हुए जगत बोला। फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चल दिए।

घूम कर लौटा तो जगत का मन प्रसन्न था। रात को खाना खाकर वह बिस्तर पर लेटा। लेटे-लेटे देर रात तक सोचता रहा।

अभी हल्की नींद आयी ही थी, कि वही खर्र-खर्र-खर्र-खर्र की आवाज फिर आने लगी। भूत के भय ने फिर जकड़ लिया। वह लगभग अचेत हो गया। आज सुबह उसे फिर तेज बुखार था। वह रात की बात किसी से न कह सका।

अगले दिन दो दिन बीमारी में बीत गए। भूत का भय उसके मन में बैठा था। आज वह कुछ स्वस्थ महसूस कर रहा था। रात में ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। थोड़ी ही देर में वह सो गया।

आधी रात को अचानक उसकी आँख खुल गई। वही खर्र-खर्र की आवाज। वह बेचैन हो उठा। जी में आया, जोर से चिल्लाए। लाख चाहने पर भी आवाज नहीं निकली। खर्र-खर्र की आवाज बन्द हो गई थी। फिर उसे नींद नहीं आयी। बुखार बढ़ गया। उसने भूत की बात किसी को नहीं बतायी थी। वह जिद्दी था। सोता भी वहीं था, उसी जगह पर।

अगली रात को वह अपने बिस्तर पर लेटा और सोचने लगा–कोई तो है, जो टहलता रहता है। वह दिखाई क्यों नहीं देता। आज वह ठीक से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखेगा। सोचते-सोचते उसकी आँख लग गयी।

थोड़ी ही देर सोया था कि फिर वही आवाज—खर्र-खर्र-खर्र-खर्र। वह उछल कर उठ बैठा। चारों तरफ देखा। वहां कोई भी नहीं था। पर आवाज तो हो रही थी।

जगत ने हिम्मत बटोरी। उसने अपने पैर जमीन पर रखे। आवाज बन्द हो गयी। वह कुछ दूर चला। उसके पैर जमीन पर पड़ते तो खर्र-खर्र की आवाज होती। वह समझ गया, जरूर कोई भूत है। यहां टहलता है, पर दिखाई नहीं देता।

चलते-चलते वह रुक गया। तभी फिर आवाज हुई, खर्र-खर्र-खर्र-खर्र। लगा, जैसे आवाज चारपाई के पास से आ रही थी। यानि भूत मेरी चारपाई के पास है। जगत पसीने-पसीने हो गया।

अब क्या होगा। उसके पैर काँपने लगे। शरीर सुन्न पड़ने लगा। वह वहीं जमीन पर बैठ गया। तभी उसकी नजर चारपाई के नीचे गयी।

कलुआ कूकुर टाँगें फैलाए मजे से सो रहा था। कुनमुनाकर कलुआ ने अपनी पूँछ हिलायी, और फिर आवाज हुयी—खर्र-खर्र-खर्र-खर्र। जगत की हँसी निकलते-निकलते रह गयी।

तो यह था भूत, जो उसे परेशान कर रहा था। वह अपने बिस्तर पर आया और लेट गया। सोचने लगा—भूत तो था ही, लेकिन बाहर नहीं, उसके मन में, जिसने उसे डराया।

सुबह जगत बहुत खुश था। उसका बुखार भी गायब हो चुका था। मामी बोलीं—"क्या बात है जगत, आज बहुत खुश हो।"

"हाँ मामी", कहकर जगत ने उन्हें पूरी कहानी सुना दी।

मामी बोली—"सच कहा जगत। पता नहीं भूत होते हैं या नहीं। होते भी हैं तो बाहर के भूत इतना तंग नहीं करते, जितना अपने मन में बैठा भूत तंग करता है। गनीमत है, तुम्हारे सिर से भूत उतर गया।"

फिर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े।

—120/40-बी, कसारी मसारी, चकिया, इलाहाबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No.....5696
Dated.....17.5.03

G.M.C.E.J
5696

अधिकार

–रुचि गोस्वामी

जिसने मरना सीख लिया है,
जीने का अधिकार उसी को।
जो काँटों का दर्द सह सके,
फूलों का अधिकार उसी को।

सदा हँसाए जो औरों को,
हँसने का अधिकार उसी को।
जो औरों को खूब पढ़ाए,
पढ़ने का अधिकार उसी को।।

–मकान नं. 270, विश्वविद्यालय परिसर के पीछे,
वकील कैम्पस, झाँसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कीमत रुपये 100/-

मोहित पब्लिकेशन्स

4675/21 गणपति भवन, अंसारी रोड
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant